# जामे (मुकम्मल) नसीहत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

* मिश्कात, रावी अबू अय्यूब असारी रदी.

एक आदमी रसूलुल्लाहﷺ के पास आया और उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझे बहुत ही थोडी और जामेअ (मुकम्मल) नसीहत फरमाईये, आपﷺ ने फरमाया की जब तुम अपनी नमाज पढने के लिये खडे हो तो उस शख्स की तरह नमाज पढो जो दुनिया को छोड कर जाने वाला है, और अपनी जुबान से ऐसी बात ना निकालो की अगर कयामत मै उसका हिसाब हो तो तुम्हारे पास कुछ कहने के लिये ना रह जाये और लोगो के पास जो कुछ माल और असबाब है उससे तुम बिल्कुल बेनियाज हो जावो. जो शख्स इस दुनिया से जा रहा हो और उसे यकीन हो गया हो की अब मै जिन्दा नही रह सकता, ऐसा शख्स बहुत ही खुशूअ से नमाज पढेगा, उसका ध्यान पूरी

तरह से अल्लाह की तरफ होगा और नमाज पढते हुवे दुनिया की वादियो मै उसका दिल भटकता नही फिरेगा. मतलब वो बात जो आदमी जुबान से निकालता है अगर वो हक के खिलाफ है और आदमी ने अपनी इस दुनिया की जिन्दगी मै उससे माफी नही मागी है तो जाहिर है की हिसाब के वकत उसके पास कुछ कहने और मजबूरी पेश करने के लिये क्या बाकी रह जायेगा. और आखिरी शब्द का मतलब ये है की लोगो के माल और असबाब और दौलत की ज्यादती पर रश्क ना करो क्युकी ये खत्म होने वाली है. जब तक दुनिया से आदमी के अन्दर बेनियाजी नही पैदा होती आखिरत की बुलंदीयो तक उसकी निगाह नही जा सकती.

* तिर्मेज़ी

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की कयामत के दिन अल्लाह की अदालत से आदमी नही हट सकता जब तक उससे पांच बातो के बारे मै हिसाब नही ले लिया जाता, उससे पूछा जायेगा की उमर किन चीजो मै गुजारी? दीन का इल्म हासिल किया तो उस पर कहा तक अमल किया? माल कहा से कमाया? और

कहा खर्च किया? जिस्म को किस काम मै घुलाया?

* तिर्मेज़ी, रावी अबू हुरैरा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जिस मुसाफिर को डर होता है की वो रास्ता ही मै रह जायेगा और वो वकत पर मंजिल पर ना पहुंच सकेगा, वो रात को सोता नही बल्कि अपना सफर रात के शुरू ही मै शुरू कर देता है, और जो ऐसा करता है वो खैरियत के साथ वकत पर मंजिल तक पहुंच जाता है. सुनलो अल्लाह का माल भारी कीमत मै मिलेगा. सुनलो अल्लाह का माल जन्नत है. मतलब अपनी असल हकीकत के लिहाज से इन्सान मुसाफिर है और आखिरत उसका असली वतन है, यहा वो कमाई करने के लिये आया है, अब जिन्हे अपना असली वतन याद है वो अगर चाहते है की खैरियत से अपने वतन पहुंचे और रास्ता के खतरो से बचकर पहुंचे तो उन्हे चाहिये की गफलत से काम ना ले, जल्द अपना सफर शुरू कर दे, वर्ना अगर सोते रहे तो पछतायेगे. फिर जिस ने ये तय किया हो की उसे अल्लाह की खुशनूदी और इनाम का घर जन्नत हासिल करना है तो उसे जान लेना चाहिये की वो गिरा

पडा माल नही है की ताजिर (व्यापरी) औने पौने दे और कोई ले ले, अल्लाह का माल हासिल करने के लिये बडी कीमत देनी पडेगी, बडी आजमाईशे आयेगी. अपने वकत को माल को, जिस्म और जान को उसके हासिल करने के लिये कुर्बान करना होगा, तब वो चीज मिलेगी जिसको पाकर आदमी अपनी हर तकलीफ भूल जायेगा.